IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 24, Issue 8, Ser. 1 (August. 2019) 84-86
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

भूगोल विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन

डॉ.ए.के.एस. राणा
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
वर्धमान कॉलेज बिजनौर, उ.प्र

सारांश

शिक्षा, शिक्षक एवं बालक के बीच की अनंत क्रिया है। प्रारंभ में शिक्षा, शिक्षक केन्द्रित थी किन्तु वर्तमान में शिक्षण पद्धति में परिवर्तन आया है। विषय वस्तु को रोचक व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्ययन में भूगोल विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। परंपरागत शिक्षण विधि के द्वारा नियंत्रित समूह का अध्यापन किया गया। शिक्षण अधिगम सामग्री से क्रियात्मक समूह को भूगोल विषय पढ़ाया गया जिसके कारण उनकी उपलब्धि अधिक पायी गयी। शोध परिणाम के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सह संबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) -

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि संस्कृति का मूलाधार शिक्षा ही होता है। शिक्षा को राष्ट्रोत्थान का मूलतत्व माना गया है क्योंकि यह देश में किये जाने वाले कार्यों की रीढ़ होती है। अतएव शिक्षण में दृश्य, श्रव्य व दृश्य-श्रव्य सामग्री द्वारा विद्यार्थियों की रूचियों व अभिवृत्तियों को विकसित किया जा सकता है। कक्षा अध्यापन के समय कुछ विद्यार्थी भूगोल विषय की संकल्पनाओं को रट लेते हैं पर उनकी समझ नहीं रखते हैं। इसलिए परीक्षा में संतोषजनक प्रदर्शन नहीं कर पाते। यहाँ पर यह विचार किया जाना भी आवश्यक है कि अपेक्षित प्रदर्शन नहीं किये जाने के कारणों को चिन्हांकित किया जा सकता है। कक्षा में बालकों का शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास एक समान हो इसके लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का उपयोग भूगोल विषय की समझ विकसित करने तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में सहायक होगा।

भूगोल विषय में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग प्रभावशाली शिक्षण को प्रेरित करता है तथा अध्ययन को स्पष्ट, तर्कसंगत एवं कमबद्ध रूप से समझाने की क्षमता विकसित करता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल विषय का अध्यापन कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
4. शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
5. परम्परागत शिक्षण विधि एवं शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा भूगोल अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
6. परम्परागत शिक्षण विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और भूगोल विषय में अभिरूचि के मध्य सह-संबंध ज्ञात करना।
7. शिक्षण अधिगम सामग्री से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और भूगोल विषय में अभिरूचि की प्रगति के मध्य सह-संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) - प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों (नियंत्रित समूह) एवं प्रायोगिक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ाये गये विद्यार्थियों (प्रयोगात्मक समूह) की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।
2. परम्परागत विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों एवं प्रायोगिक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि में अन्तर पाया जावेगा।
3. शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह-संबंध पाया जावेगा।
4. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह-संबंध पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation) - प्रस्तुत शोध व्याख्यान विधि (परम्परागत विधि) तथा बाल केन्द्रित विधि (प्रयोगात्मक विधि) तक परिसीमित है।

- **शोध प्रक्रिया (Research Process) -** किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample) –** प्रस्तुत अध्ययन में बिजनौर जिले की दो शासकीय शालाओं के 60 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से कर दो समान समूहों का निर्माण किया गया।

क्र.	समूह	छात्र संख्या
1	परम्परागत समूह	30
2	क्रियात्मक समूह	30

- **उपकरण (Tools) -** अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया -

  1. अभिरूचि परीक्षण 2. उपलब्धि परीक्षण

चर (Variables) - प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है -

1. स्वतंत्र चर –

(1) परम्परागत शिक्षण विधि

(2) शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षण विधि।

2. परतन्त्र चर –

(1) अभिरूचि (शिक्षा के प्रति)

(2) शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01: परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ाये गये विद्यार्थियों एवं प्रायोगिक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।

सारिणी क्रमांक – 01

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
परम्परागत समूह	60	36.58	2.96	6.6	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर
क्रियात्मक समूह	60	41.2	4.59		

परंपरागत एवं क्रियात्मक समूह के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 36.58 व 41.2, प्रमाणिक विचलन 2.96 व 4.59 तथा 1 मान 6.6 पाया गया। यह मान 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है अर्थात् परम्परागत समूह एवं क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 02: परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों (परम्परागत समूह)एवं शिक्षण अधिगम सामग्री विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों (क्रियात्मक समूह) की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 02

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
परम्परागत समूह	60	36.58	2.96	6.6	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर
क्रियात्मक समूह	60	41.2	4.59		

मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t के मान की गणना की गयी। t तालिका के अनुसार एक प्रतिशत विश्वास स्तर पर t का मान 2.63 होना चाहिए। प्राप्त मान इससे अधिक है। अतः मध्यमानों में सार्थक अंतर है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि क्रियात्मक शिक्षण विधि से भूगोल अध्ययन करने वाले समूह और परम्परागत शिक्षण विधि से भूगोल अध्ययन करने वाले समूह की शैक्षिक अभिरूचि में अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 03: "परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह-सम्बंध पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

समूह	छात्र संख्या	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
परम्परागत समूह	60	0.04	नगण्य स्तर का धनात्मक सहसंबंध

गणना द्वारा प्राप्त सह संबंध गुणांक का मान 0.04 है। अतः कहा जा सकता है कि परम्परागत समूह के विद्यार्थियों में भूगोल विषय में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य में नगण्य धनात्मक सह-संबंध है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 04: क्रियात्मक अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह-सबंध पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक – 03

समूह	छात्र संख्या	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
क्रियात्मक समूह	60	0.39	नगण्य स्तर का धनात्मक सहसंबंध

गणना द्वारा प्राप्त मान के अनुसार क्रियात्मक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक अभिरूचि में निम्न धनात्मक सबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की गयी।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. परम्परागत समूह एवं क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।
2. परम्परागत शिक्षण विधि (परम्परागत समूह) एवं शिक्षण अधिगम सामग्री विधि (क्रियात्मक समूह) के द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में अन्तर पाया गया।
3. परम्परागत समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में नगण्य धनात्मक सह संबंध पाया गया।
4. क्रियात्मक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में निम्न धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) - शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं -

1. भूगोल शिक्षण के लिए उचित शैक्षिक सामग्रियाँ विद्यालय में उपलब्ध होनी चाहिए जिससे शिक्षक, शिक्षण कार्य में इनका उपयोग करते हुए प्रभावी शिक्षण कर सकें।
2. नए उपकरणों के सृजन की ओर शिक्षकों को छात्रों के साथ प्रयास करने चाहिए।
3. शिक्षण हेतु शिक्षकों को परम्परागत शिक्षण विधियों की अपेक्षा क्रियात्मक/प्रायोगिक विधि का प्रयोग करना चाहिए।
4. पाठ्यक्रम में परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे उन्हें नई विधियों की जानकारी प्राप्त हो सके।
5. भूगोल विषय के शिक्षकों को कक्षा शिक्षण में इस प्रकार का अध्यापन करना चाहिए कि सभी विद्यार्थी रूचि पूर्वक भाग ले सकें।

संदर्भ (References) -

1. सिंह, एन.एच. : भूगोल शिक्षण, राजा बलवंत सिंह कालेज, आगरा
2. कपिल, डॉ. एच. के. : अनुसंधान विधियाँ हरप्रसाद भार्गव, आगरा
3. कपिल, डॉ. एच. के. : सांख्यिकीय के मूल तत्व, हरप्रसाद भार्गव, आगरा
4. एंटोफिना, वी.आर. (रा।)। शिक्षण और सीखने की सामग्री। 10 अक्टूबर, 2000 को Slideshare.net से लिया गया
5. ऑडियो-विजुअल एड्स का अर्थ. (2011)। 11 अक्टूबर, 2000 को ecoursesonline.iasri.res.in से लिया गया
6. स्लाइड देखने का यंत्र।2002 (11) अक्टूबर, 2002 को Dictionary.cambridge.org . से लिया गया
7. शिक्षण में शिक्षण सामग्री का महत्व। 2002 । शिक्षा मंत्रालय, गुयाना। 09 अक्टूबर, 2002 को Education.gov.gy . से लिया गया
8. कैनेडियन काउंसिल फॉर जियोग्राफिक एजुकेशन (CCGE)। (2008)। स्कूल पाठ्यक्रम में भूगोल का महत्व
9. गरबा, एफ। (2008)। (2008)। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण और सीखने में सुधार की दिशा में निर्देशात्मक मीडिया के उपयोग की एक परीक्षा। (फंटुआ स्थानीय सरकार क्षेत्र, कटसीना राज्य का एक केस स्टडी)।
10. ग्रेंजर, सीए और अन्य। (2002)। सूचना प्रौद्योगिकी के शिक्षकों के सफल कार्यान्वयन में योगदान करने वाले कारक। जर्नल ऑफ़ कंप्यूटर असिस्टेड लर्निंग।
11. इलिया, एमए (2010)। भूगोल के शिक्षण और सीखने में निर्देशात्मक सामग्री का उपयोग।